03-07-2020

गन्ने की खोई के निस्तारण के लिए इनोवेशन जरूरी

■ कानपुर (एसएनबी)।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के तत्वावधान में 'गन्ने की खोई को वैकल्पिक उपयोग' विषय पर आयोजित वेबिनार में डीसीएम श्रीराम लिमिटेड के निदेशक सह मुख्य कार्यपालक

वेबिनार में गन्ने की खोई से विभिन्न उत्पादों के निर्माण पर हुआ मंथन

अधिकारी (शर्करा) आरएल तमक ने कहा कि गन्ने की खोई के सीमित उपयोग के कारण इसका उचित निपटान एक समस्या बनती जा रही है। इसके निदान के लिए उन्होंने शर्करा कारखानों को गन्ने की खोई से मूल्यवर्द्धित उत्पादों की प्राप्ति के क्षेत्र में इनोवेशन का आह्वान किया।

संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने अपने संबोधन में कहा कि गन्ने की खोई के

अवयवों को देखते हुए इसका उपयोग 2-जी इथेनाल एवं अन्य जैव उत्पादों में किया जा सकता है। इससे जैव ईंधन, जैव पदार्थ एवं जैव रसायन विविध उपयोगी पदार्थों के उत्पादन में किया जा सकता है। इससे वित्तीय लाभ के साथ ही पर्यावरण को अनुकूल बनाने में मदद मिल सकती है। शर्करा अभियांत्रिकी के सहायक आचार्य विनय कुमार ने खोई से फर्नीचर निर्माण में उपयोगी पार्टिकल बोर्ड, लेमिनेशन बोर्ड जैसे उत्पादों के विकास पर अपनी प्रस्तुति दी। इससे वनों पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जा सकता है। इससे क्रॉकरी भी बनाया जा सकता है। कार्बनिक रसायन के सहायक आचार्य डॉ. विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव ने गन्ने की खोई तथा अन्य अपशिष्ट से जैव प्लास्टिक के निर्माण की प्रक्रिया पर व्याख्यान दिया। जैव रसायन की आचार्य डॉ. सीमा परोहा ने मानव आहार में प्रयोग के लिए फाइबर विकास की संभावनाओं को इंगित किया। समापन वक्तव्य में जेपी मुखर्जी एवं एसोसिएट, पुणे के एमडी डॉ. एमएल सुंदरम ने शर्करा उद्योग को खोई से निर्मित विभिन्न उत्पादों के लिए को-रूम स्थापना की सलाह दिया। वेबिनार में श्रीलंका, नेपाल, केन्या, ब्राजील, नाइजीरिया व इंडोनेशिया से 800 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए।

Webinar

KANPUR (PNS): An international webinar on 'Alternative uses of bagasse' was organised by National Sugar Institute, Kanpur. Executive Director & CEO (Sugar Business) of DCM Shri Ram Ltd., RL Tamak, in his inaugural address called upon the sugar industries across the globe to innovate on developing value-added products from bagasse as in many countries, the bagasse-based power generation was not feasible and bagasse disposal created a problem. Looking to the composition of bagasse, it can be a potential source for producing 2G ethanol and other bio-products. NSI Director Prof Narendra Mohan, in his key note address laid emphasis on utilisation of bagasse for all purposes — bio-energy, food/feed, bio-material and bio-chemicals. Utilisation of bagasse in such a manner would prove to be money spinner, providing many products which were environment-friendly and good for health, he said.

गन्ने की खोई से बन सकते फर्नीचर

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

गन्ने की खोई से अब फर्नीचर व क्रॉकरी बनेंगे। इससे पर्यावरण सुरक्षित रहेगा और बेकार खोई से आर्थिक लाभ भी होगा। कई देशों ने इसका प्रयोग शुरू कर दिया है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसएआई) के वैज्ञानिक भी फर्नीचर में प्रयुक्त होने वाले बोर्ड को गन्ने की खोई से तैयार करने की तकनीक विकसित कर चुके हैं।

एनएसएआई की ओर से गुरुवार को आयोजित इंटरनेशनल वेबिनार में ये बातें सामने आईं। इसका विषय गन्ने की

वेबिनार

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में हुआ इंटरनेशनल वेबिनार
- विशेषज्ञों ने विभिन्न उत्पादों के बारे में दी जानकारी

खोई का वैकल्पिक उपयोग रहा। इसमें भारत के अलावा श्रीलंका, नेपाल, केन्या, ब्राजील, नाइजीरिया, थाईलैंड और इंडोनेशिया के विशेषज्ञों ने भी हिस्सा लिया। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि गन्ने की खोई का उपयोग सिर्फ ईंधन में करने से काम नहीं चलेगा। इससे हार्डबोर्ड तैयार किया जा रहा है, जो लकड़ी के फर्नीचर का विकल्प हो सकता है। यूके-लिप्टस या पाइन से निर्मित पैनल की तुलना में गन्ने की खोई से तैयार पैनल अधिक गुणवत्तायुक्त होता है। गन्ने की खोई को अधिक तापमान व दबाव से अलग-अलग रूप देकर क्रॉकरी भी तैयार की जा सकती है। संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. विष्णु प्रभाकर ने बताया कि प्लास्टिक की क्रॉकरी से निपटने का यह बेहतर विकल्प है। डॉ. सीमा परोहा ने बताया कि गन्ने की खोई से प्राप्त फाइबर को आहार में भी शामिल किया जा सकता है।

गन्ने की खोई से बनाएं पैनल लकड़ी की खपत होगी कम

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में गन्ने की खोई के वैकल्पिक उपयोग को लेकर गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन हुआ। इसमें कहा गया कि गन्ने की खोई से बने पैनल, यूकेलिप्टस और चीड़ के पैनलों से बेहतर होते हैं। ये भौतिक व यांत्रिक गुणों को अच्छा प्रदर्शित करते हैं। गन्ने की खोई से पार्टिकल बोर्ड तथा पैनल बनाकर लकड़ी की खपत कम की जा सकती है। इन दोनों का इस्तेमाल फर्नीचर में होता है। जिससे वनों पर पड़ने वाले अनावश्यक दबाव को कम किया जा सकता है। खोई थर्मोकोल और प्लास्टिक से बनी क्रॉकरी का भी विकल्प बन सकती है।

एनएसआई में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि गन्ने की खोई का उपयोग टू-जी इथेनॉल के उत्पादन एवं जैव उत्पादों में भी किया जा सकता है। इसके अलावा यह जैव ईंधन, जैव रसायन में भी उपयोगी है। इन उत्पादों का उपयोग सस्ता और पर्यावरण के प्रति अनुकूल है। इस मौके पर इंस्टीट्यूट के विज्ञानी विनय कुमार, कार्बनिक रसायन के विज्ञानी डॉ. विष्णु प्रभाकर श्रीवास्तव, जेपी मुखर्जी, डॉ. एमएस सुंदरम आदि ने विचार व्यक्त किए। वेबिनार में श्रीलंका, नेपाल, केन्या, नाइजीरिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया के प्रतिनिधियों ने भी शिरकत की।